गुरु नानक – सबद ३५

आखण जोर चुपै नह जोर ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

आखण जोर चुपै नह जोर ॥
जोर न मंगण देण न जोर ॥
जोर न जीवण मरण नह जोर ॥
जोर न राज माल मन सोर ॥
जोर न सुरती गिआन वीचार ॥
जोर न जुगती छुटै संसार ॥
जिस हथ जोर कर वेखै सोइ ॥
नानक उतम नीच न कोइ ॥३३॥

सार: सच्ची शक्ति यह जानने में है कि आप कुछ नहीं जानते। यह मन को किसी विशिष्ट रूप या विचार के महत्व को नकार कर उससे बेलगाव होने और उसकी पहचान तोड़ने के लिए प्रशिक्षित करता है। यह एक अभ्यास है जो बाहरी प्रेरणाओं द्वारा बनाऐ गऐ भ्रम पैदा करने वाली धारणाओं और हमारी मूल सार्वभौमिक चेतना के अंतिम सत्य के बीच अंतर को पहचानती है।

आखण जोर चुपै नह जोर ॥
उपदेश देने में कोई शक्ति नहीं और चुप रहने में कोई शक्ति नहीं।

जोर न मंगण देण न जोर ॥
भीख लेने में कोई शक्ति नहीं है और दान देने में कोई शक्ति नहीं।

जोर न जीवण मरण नह जोर ॥
गृहस्थ होने में कोई शक्ति नहीं और संन्यासी होने में कोई शक्ति नहीं।

जोर न राज माल मन सोर ॥

शासक बनने, धन-दौलत रखने और गुप्त शक्तियाँ प्राप्त करने में कोई शक्ति नहीं।

जोर न सुरती गिआन वीचार ॥

ज्ञान प्राप्त करने और आध्यात्मिक ग्रंथों पर बातचीत करने में कोई शक्ति नहीं।

जोर न जुगती छुटै संसार ॥

मोक्ष के उपाय जानने में कोई शक्ति नहीं।

जिस हथ जोर कर वेखै सोइ ॥

शक्ति को धारण करने वाला वही है जो आत्मचिंतन करता है।

नानक उतम नीच न कोइ ॥३३॥

नानक कहते हैं कि जो किसी को श्रेष्ठ या निम्न नहीं मानता, वही सत्ताधारी है। (३३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि चिंतन और आत्म-बोध श्रेष्ठता और हीनता के दोहरेपन से दूर सबसे शक्तिशाली गुण हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com